नई दुनिया 11-4-19

डाटा साइंस टेक्नोलॉजी के बढ़ते उपयोग को देखते हुए डीएवीवी ने लिया फैसला

आईईटी में शुरू होगा डाटा साइंस कोर्स

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

अब डाटा को एक जगह एकत्रित करना और इससे विभिन्न तरह के डाटा को अलग करके इसका एनालिसिस करना आसान होता जा रहा है। डाटा साइंसेस टेक्नोलॉजी का उपयोग होने से अब डाटा एनालिसिस में गलतियों के संभावना भी कम हो रही है। इस क्षेत्र में कॅरियर की बढ़ती संभावनाओं के मद्देनजर देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी में डाटा साइंसेस के नए कोर्स शुरू होंगे। अभी आईटी इंडस्ट्रीज में डाटा संबंधित काम बिग डाटा टेक्नोलॉजी से हो रहा है। नए सेशन में इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आईईटी) और स्कूल ऑफ कम्प्यूटर साइंस डिपार्टमेंट में इसकी शुरुआत हो सकती है।

मशीन लर्निंग टेक्नोलॉजी से आसान होंगे काम

डाटा साइंसेस से एकत्रित किए गए डाटा को मशीन लर्निंग टेक्नोलॉजी से इंडस्ट्रीज और अन्य क्षेत्रों में काम आसान हो सकेगा। आईईटी के प्रोफेसर डॉ. प्रतोष बंसल का कहना है कि देश और दुनिया में डाटा को मैनेज करना बड़ी चुनौती

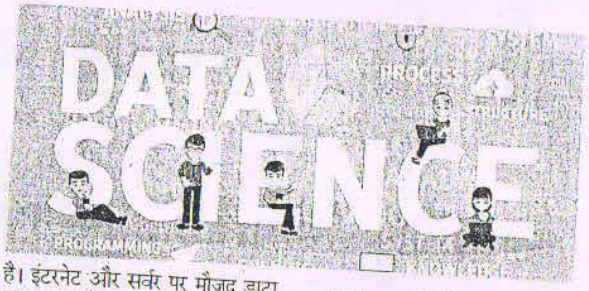

है। इंटरनेट और सर्वर पर मौजूद डाटा को सही फॉर्मेट में जमाना और इसके परिणामों का एनालिसिस करने में डाटा साइंसेस महत्वपूर्ण योगदान देता है, इसलिए भविष्य में इसकी डिमांड को देखते हुए नए कोर्स डिजाइन करने की जरूरत है। इंजीनियरिंग के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी इसका उपयोग करके विकास की रफ्तार को तेज किया जा सकता है। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. नरेंद्र कुमार धाकड़ का कहना है कि इस टेक्नोलॉजी के बारे में अवेयरनेस बढ़ रही है। इसके लिए कई सेमिनार भी आयोजित किए जाते रहे हैं। अब डाटा साइंसेस के बारे में स्टूडेंट्स को ज्यादा जानकारी मिले इसके लिए नए कोर्स शुरू करेंगे।

विदेश जाते हैं स्टूडेंट्स

इस कोर्स के लिए चार से पांच साल पहले तक स्टूडेंट्स विदेशों की यूनिवर्सिटी में जाते रहे हैं। हालांकि करीब दो साल से देश के कुछ शहरों में यह कोर्स पढ़ाया जा रहा है। प्लेसमेंट एंड ट्रेनिंग अधिकारी अतुल एन. भरत का कहना है कि कंपनियों में इसकी जरूरत बढ़ती जा रही है। जो स्टूडेंट्स इस कोर्स को कर रहे हैं वे तीन-चार साल बाद जब पासआउट होंगे तो उनके लिए जॉब की कई संभावनाएं होंगी। ये कोर्स रिसर्च आधारित है। साइंस, मैथ्स और इंजीनियरिंग के सभी क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता है।

आ रही नई टेक्नोलॉजी

नेशनल साइबर एक्सपर्ट रक्षित टंडन का कहना है कि स्टूडेंट्स कॉलेज में जो कोर्स कर रहे है, उसमें लगातार अपडेशन हो रहा है। पांच साल पहले डॉट नेट और जावा प्रोग्राम का बोलबाला था। अब नए सॉफ्टवेयर आ गए है। जिसका उपयोग इंडस्ट्रीज में किया जा रहा है। बिग डाटा भी अभी चलन में है, लेकिन कुछ समय बाद डाटा साइंसेस के रतर पर काम होने लगेगा। इसमें डाटा एकत्रित करने और इसके निष्कर्ष निकालने में गलतियों के चांस बहुत कम होंग।